"दीदार"

—नलिनी (फरीदाबाद)

आज सांच केहेना सो तो काहू न रुचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत ।
सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत ।।

अल्लाह कसम है मुझे—जो भी लिखूंगी—
लिखूंगी सच सच—कोई विश्वास करे या न करे—
हुए दीदार मुझे श्री प्राणनाथ जी के—
जो आये हुए हैं लेने रूहों को—परमधाम से—इस जिमी पे—
देखा मैंने मेंहेंदी इमाम को—बीच मोमिनों के बैठे हुए—
वाणी की चर्चा सुनाते हुए—देखा मैंने उन्हें ग्रन्थो के मायने खोलते हुए—
अल्लाह कसम है मुझे—जो भी लिखूंगी—
लिखूंगी सच सच—कोई विश्वास करे या न करे—
देखा मैंने रूहों के आशिक को—
रूहों की तलाश में घूमते हुए—
दुनियां भर के ताने सहते हुए—
सहते हुये—देखा मैंने उन्हें मुस्कारते हुए—
अल्लाह कसम है मुझे—जो भी लिखूंगी—
लिखूंगी सच सच—कोई विश्वास करे या न करे—
देखा मैंने श्री प्राणनाथ जी को—नूरी जलवों में—
क्या देखा—बस जब से देखा—दुनियां ही भूल गई है मुझे—
अल्लाह कसम है मुझे—जो भी लिखूंगी—
लिखूंगी सच सच—कोई विश्वास करे या न करे—
जिसने भी देखा उन्हें—बस—बन गया है वह दीवाना उनका—
दीदार होंगे रूहों को पहले—पीछे दीदार सब को भिस्तों में—

हादी मोमिनों बीच में, पाइए हक इस्क ईमान ।
ए पाकी है मोमिनों, होए खाली सोर जहान ।।

पेहेला दीदार होगे मोमिनों—ऐसा लिखा है मारफत सागर में—
अल्लाह कमस है मुझे—जो भी लिखूंगी—लिखूंगी सच सच—कोई विश्वास करे या न करे